

20/8/25

प्राणजी पेरा हरी काल पराकाशत अत्रुपस्थित (का
काल का काद-काक प्राणाय लमवारि मर, विरुद्ध न
ही लो पराकाशत संय व न ही अत्रुप स्थित।
अप्राण मय। अतः यह श्वासाय अहम पराकाशत
होती है अत्रुप व ही प्राण ही पराकाशत

Kayendrap

हुपम या कार्यवाही विवरण

केसला सुनकर लोक गैर से काम की जाकर
फिरकन सतार की

Jayesh

नय
अह
हुपम
ज